

# कल्पवृक्ष

No.	Murli/Avyakt Vani Points	Download
1	बाप कल्प-2 आकर कल्पवृक्ष की नॉलेज देते हैं; क्योंकि खुद बीजरूप है। सत् है, चैतन्य है। इसलिए कल्पवृक्ष का सारा राज़ समझाते हैं। (मु. 17.11.68. पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
2	ज्ञान में तो सिर्फ बीज को जानना होता है। बीज के ज्ञान से सारा झाड़ (बुद्धि में) आ जाता है। (मु. 29.9.77 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
3	बीज के साथ-2 वृक्ष की जड़ में आप आधारमूर्त(उद्धारमूर्त) श्रेष्ठ आत्माएँ हो। (अ.वा. 12.1.82 पृ.233 अंत)	<a href="#">Download</a>
4	ब्राह्मण आत्माएँ आदि देव की आदि रचना हो। इसलिए कल्प वृक्ष में ब्राह्मण फाउंडेशन अर्थात् जड़ में दिखाए गए हैं। अपना स्थान देखा है ना? तो वृक्ष में आप आदि रचना बीज के समीप जड़ में दिखाए गए हो। इसलिए डायरेक्ट रचना हो। (अ.वा. 8.4.92 पृ.181 आदि)	<a href="#">Download</a>
5	राख कौन बनते हैं और कितने बनते हैं और कोटों में से, लाखों में से एक कौन निकलते हैं, वह भी देखेंगे। (अ.वा. 23.9.73 पृ.161 आदि)	<a href="#">Download</a>
6	यह पढाई कोटों में कोऊ ही पढ़ेंगे। (मु. 20.4.70 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
7	पुराने झाड़ को रिजुबिनेट करना है। नया सैम्पलिंग लगाना है। अभी हम देवी-देवता सनातन धर्म का कलम लगाय रहे हैं। (मु. 5.2.68 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
8	जब यह सैर कर लौटे तो नए वृक्ष की कलम को देखा। कलम में कौन थे? आप सभी अपने को कलम समझते हो? वृक्ष का आधार समझते हो? जब पुराने वृक्ष को बीमारी लग गई, जड़-जड़ीभूत हो गया तो अब नया वृक्ष-आरोपण आप आधार मूर्तियों द्वारा ही होगा। ब्राह्मण हैं ही नए वृक्ष की जड़ें अर्थात् फाउंडेशन। (अ.वा. 19.10.75 पृ.201 अंत)	<a href="#">Download</a>
9	ब्रह्मा-सरस्वती भी वास्तव में मम्मा-बाबा नहीं हैं। (मु. 31.3.72 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
10	मनुष्य समझते हैं एडम ब्रह्मा, ईव सरस्वती। वास्तव में यह राँग है। निराकार गॉड फादर है तो मदर भी जरूर (निराकार स्टेज वाली ही) होगी। (मु. 18.5.73 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
11	यह मात-पिता, ब्रह्मा-सरस्वती दोनों कल्पवृक्ष के नीचे बैठे हैं, राजयोग सीख रहे हैं। तो जरूर उन्हीं के गुरु चाहिए। (मु. 28.1.73 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>

12	<p>भल कहते हैं दादा को क्यों रखा है? अरे! प्रजापिता ब्रह्मा तो जरूर यहाँ चाहिए ना। यह तो पतित है। झाड़ में देखते हो नीचे तपस्या में बैठे हैं...; परन्तु यह तो बदलते रहते हैं। यह तो मुख्य है यह तो सदैव कायम है। (मु. 9.11.66 पृ.2 अंत)</p>	<a href="#">Download</a>
13	<p>यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ एक ही है। उनका एक ही बीज है। इसको कल्पवृक्ष कहा जाता है। और कोई झाड़ को कल्पवृक्ष नहीं कहा जाता। इसके नीचे कपिलदेव और कामधेनु अब बैठी हुई हैं। कपिलदेव को आदि देव ब्रह्मा भी कहते हैं। नाम तो बहुत रख दिए हैं। अब कामधेनु कोई गऊ तो नहीं है। मनुष्यों ने फिर गऊ रख दी है। (मु. 19.3.73 पृ.1 आदि)</p>	<a href="#">Download</a>
14	<p>दैवी धर्म का फाउंडेशन ही सड़ गया है। बाकी ऐसे नहीं कहेंगे कि फाउंडेशन था नहीं।... प्रायः गुम है। (मु. 5.12.71 पृ.2 मध्य)</p>	<a href="#">Download</a>
15	<p>बनियन ट्री का मिसाल एक्युरेट है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म का फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। (मु. 8.7.68 पृ.2 मध्यादि)</p>	<a href="#">Download</a>
16	<p>बड़ के झाड़ का मिसाल भी इनके ऊपर ही है। संन्यासी लोग भी मिसाल देते हैं; परन्तु उनकी बुद्धि में कुछ भी नहीं है। तुम तो जानते हो कैसे आदि सनातन देवी-देवता धर्म प्रायः लोप हो जाता है। अभी वह फाउंडेशन है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। सभी धर्म हैं। बाकी एक धर्म नहीं है। बड़ का झाड़ भी देखो कैसे खड़ा है। थुर है नहीं, फिर भी झाड़ सदैव हरा-भरा है। दूसरे झाड़ फाउण्डेशन बिगर सूख जाते हैं; क्योंकि थुर बिगर पानी कैसे मिले; परन्तु वह बड़ का झाड़ सारा ताजा खड़ा है। यह वण्डर है ना। वैसे ही इस झाड़ में भी देवी-देवता धर्म है नहीं। (मु. 25.12.86 पृ.2 मध्य)</p>	<a href="#">Download</a>
17	<p>कोई प्रशंसा करे और मुस्कराए-इसको सहनशीलता नहीं कहते; लेकिन दुश्मन बन, क्रोधित हो अपशब्दों की वर्षा करे, ऐसे समय पर भी सदा मुस्कुराते रहना, संकल्प मात्र भी मुरझाने का चिह्न चेहरे पर न हो। इसको कहा जाता है सहनशील। दुश्मन आत्मा को भी रहमदिल भावना से देखना, बोलना, सम्पर्क में आना। इसको कहते हैं सहनशीलता। (अ.वा. 30.1.88 पृ.239 आदि)</p>	<a href="#">Download</a>
18	<p>जैसे यादगार शास्त्रों में महावीर हनुमान के लिए दिखाते हैं कि इतना बड़ा पहाड़ भी हथेली पर एक गेंद के समान ले आया। ऐसे, कितनी भी बड़ी पहाड़ समान समस्या हो, तूफान हो, विघ्न हो; लेकिन पहाड़ अर्थात् बड़ी बात को छोटा-सा खिलौना बनाए खेल की रीति से सदा पार किया वा बड़ी भारी बात को सदा हल्का बनाए स्वयं भी हल्के रहे और दूसरों को भी हल्का बनाया। इसको कहते हैं सहनशीलता। छोटे से पत्थर को पहाड़ नहीं; लेकिन पहाड़ को गेंद बनाया। विस्तार को सार में लाना, यह है सहनशीलता। (अ.वा. 30.1.88 पृ.239 मध्य)</p>	<a href="#">Download</a>

19	अन्य धर्म की स्थापना और इस देवी-देवता धर्म की स्थापना में विशेष क्या अंतर है? अन्य धर्म जो भी स्थापन हुए हैं वह वाणी बल द्वारा; लेकिन देवी-देवता धर्म स्थापन होता है- अपनी लाइफ बनाने से। यहाँ पहले प्रैक्टिकल लाइफ का भाषण चाहिए। मुख का भाषण पीछे। (अ.वा. 22.1.76 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
20	जो कोई भी बात को सहन कर लेता है तो सहन करना अर्थात् उसकी गहराई में जाना। जैसे सागर के तले में जाते हैं तो रत्न लेकर आते हैं। ऐसे ही जो सहनशील होते हैं वह गहराई में जाते हैं, जिस गहराई से बहुत शक्तियों की प्राप्ति होती है। सहनशील ही मनन शक्ति को प्राप्त कर सकता है। सहनशील जो होता है वह अंदर-ही-अंदर अपने मनन में तत्पर रहता है और जो मनन में तत्पर रहते हैं वही मग्न रहते हैं। (अ.वा. 8.6.71 पृ.97 आदि)	<a href="#">Download</a>
21	सूर्यवंशी:- सदा बाप के साथ और सर्वसंबंध की अनुभूतियों में लवलीन रहेंगे। सूर्यवंशी चढ़ती और उतरती कला में नहीं आते।... सूर्यवंशी सदा विश्व-कल्याण की ज़िम्मेदारी को निभाते हुए जितनी बड़ी ज़िम्मेदारी उतना ही डबल लाइट रूप होंगे।... सूर्यवंशी अपने वृत्ति और वायब्रेशन की किरणों द्वारा अनेक आत्माओं को स्वस्थ अर्थात् स्वस्मृति में स्थित करने का अनुभव करावेंगे। (अ.वा. 6.1.79 पृ.181, 182 मध्य)	<a href="#">Download</a>
22	बाबा के प्यार में सहन करना, सहन नहीं है, यह त्याग का भाग्य लेना है। इस त्याग का प्रत्यक्ष फल मिलना है। भविष्य तो परछाई है ही। (अ.सं. 18.3.01 पृ.106 मध्य)	<a href="#">Download</a>
23	आपकी सहनशीलता से गाली देने वाले भी आपको गले लगाएँगे। सहनशीलता में इतनी शक्ति है; लेकिन थोड़ा समय सहन करना पड़ता है। (अ.वा. 25.10.02 पृ.13 अंत)	<a href="#">Download</a>
24	राम कहा जाता है बाप को। (मु. 6.9.70 पृ.3 के मध्य)	<a href="#">Download</a>
25	जैसे साकार बाप की विशेषता देखी। हर-एक के दिल से यह आवाज़ निकलता रहा- हमारा बाबा! चाहे पच्छड़माल हो, फिर भी “हमारा बाबा!” यह अनुभव हर आत्मा का रहा। (अ.वा. 7.2.75 पृ.52 मध्य)	<a href="#">Download</a>
26	तुम हो आदि सनातन देवी-देवता धर्म के पक्के। तुम्हारी बुद्धि में ऊँच-ते-ऊँच भगवान है। (मु. 26.2.68 पृ.1 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
27	ब्राह्मण रूप में वृक्ष की जड़ में हो और देवता रूप में वृक्ष के तना हो। और सभी धर्म आप तना से निकलते हैं। तो आप डायरेक्ट रचना का कितना महत्त्व है! डायरेक्ट बीज के साथ संबंध है। उन्हीं का इनडायरेक्ट संबंध है, आपका डायरेक्ट है। (अ.वा. 8.4.92 पृ.181 मध्य)	<a href="#">Download</a>
28	अभी तुम बच्चे जानते हो बरोबर हम असल देवता धर्म के थे। वह धर्म बहुत सुख देने वाला है। (मु. 21.6.65 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>

29	आदि सनातन देवी-देवता धर्म को ही हीरो-हीरोइन कहा जाता है।हीरे जैसा जन्म और कौड़h जैसा जन्म तुम्हारे लिए गाया हुआ है। (मु. 21.1.99. पृ 2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
30	गीता भी है देवी-देवताओं का धर्मशास्त्र। तुम्हारा दूसरे कोई धर्म में जाने से क्या फायदा। हरेक अपनी कुरान, बाइबिल आदि ही पढते हैं। अपने धर्म को जानते हैं। एक भारत ही अधर्मी बना है। सभी धर्मों में चले जाते हैं। और सभी अपने-2 धर्म में हैं। (मु. 3.5.70 पृ.1 अंत पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
31	गीता तो है ही सभी शास्त्रों का मात-पिता। ऐसे नहीं कि सिर्फ़ भारत के शास्त्रों का मात-पिता है। नहीं। जो भी बड़े-ते-बड़े शास्त्र सारी दुनिया में हैं सभी का मात-पिता है। (मु. 20.2.73 पृ.1 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
32	मेरी मत तो मशहूर है। श्रीमत्भगवत् गीता। (मु. 3.5.70 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
33	ऐसे कोई भी शास्त्र में लिखा हुआ नहीं है कि क्राइस्ट को याद करने से आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएगी। एक गीता में ही है कि मामेकम् याद करो। गॉड फादर का शास्त्र है ही गीता। (मु. 20.11.91 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
34	तुम भारतवासियों को तो गीता पढनी है। अपना धर्म शास्त्र छोड़ दूसरे का सुनना-पढना यह तो व्यभिचार हुआ। (मु. 19.9.87 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
35	बाप कहते हैं रावण ने तुमको बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि बना दिया है। खास भारतवासियों को। तुम देवी-देवता थे यह भी भूल गये हो तो तुच्छ बुद्धि हुए ना। अपने धर्म को भूल जाना यह है तुच्छ बुद्धि का काम। (मु. 13.5.70 पृ.1 आदि)	<a href="#">Download</a>
36	अभी पता पडा है हम जो देवी-देवता थे सो फिर कैसे वाममार्ग में आते हैं। वाममार्ग विकारी मार्ग को कहा जाता है। (मु. 29.4.70 पृ.3 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
37	वास्तव में हिन्दू कोई धर्म है नहीं। धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो पड़े हैं इसलिए अपने को देवी-देवता कहलाते नहीं।... हिन्दुओं को अपने धर्म का पता नहीं है। भारत का असुल में देवी-देवता धर्म है। वह चला आना चाहिए; परन्तु आदि सनातन देवी-देवता धर्म को भूल जाने कारण कह देते हमारा धर्म हिन्दू है। हिन्दू धर्म तो होता ही नहीं। कितने पत्थर बुद्धि हैं। (मु. 21.6.70 पृ.2 अंत, मु.29.6.90 आदि)	<a href="#">Download</a>
38	यह भी तुम समझते हो यह सुख और दुख का खेल है। तुम्हारे बुद्धि में है आधा कल्प है सुख आधा कल्प है दुख। बाप समझाते हैं पौना से भी जास्ती सुख भोगते हो। आधा कल्प के बाद भी तुम बहुत धनवान थे। कितने बड़े-2 मन्दिर आदि बनाते थे। दुख तो पीछे होता है। जब बिल्कुल तमोप्रधान भक्ति बन जाती है। (मु. 13.5.68 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>

39	सभी धर्म वालों से देवता धर्म की आदमशुमारी जास्ती होगी; परंतु वह कन्वर्ट हो गए हैं।... इसलिए थोड़ी संख्या हो जाती है। यह भी ड्रामा। इसमें समझने की बड़ी विशाल बुद्धि चाहिए। (मु. 25.9.73 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
40	हिंदुओं को मुसलमान लोग काफर कहते हैं; क्योंकि वो अपने धर्म को जानते ही नहीं हैं। कब किसी को मानेंगे, कब किसी को मानेंगे। बहुतों के पास जाते रहेंगे। क्रिश्चियन लोग कब किसी के पास जावेंगे नहीं। (मु. 1.3.67 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
41	मुख्य हैं ही 4 धर्म- डिटीज़्म, इस्लामिज़्म, बौद्धिज़्म, क्रिश्चियनिज़्म। बाकी फिर इनसे वृद्धि होती गई है। इन भारतवासियों को पता ही नहीं पड़ता हम किस धर्म के हैं। धर्म का मालूम नहीं है तो धर्म ही छोड़ देते। (मु. 21.9.68 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
42	सागर में विशेष दो शक्तियाँ सदैव देखने में आवेंगी।... (ज्ञान) लहरों द्वारा सामना भी करते हैं और हर वस्तु व व्यक्ति को स्वयं में समा भी लेते हैं। (अ.वा. 21.9.75 पृ.121 आदि)	<a href="#">Download</a>
43	सागर के बच्चे हैं, सागर की विशेषता है ही समाना। जिसमें समाने की शक्ति होगी वही शुभ भावना, कल्याण की कामना कर सकेंगे। इसलिए दाता बनना, समाने के शक्ति स्वरूप सागर बनना। (अ.वा.31.3.86 पृ.298 आदि)	<a href="#">Download</a>
44	अगर कोई सामना करे तो तुम कायदे सिर लड़ो। (मु.7.7.70 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
45	जैसे चन्द्रमा की कलाएँ बढ़ती और घटती रहती हैं, वैसे चन्द्रवंशी कब बहुत उमंग-उत्साह में सम्पूर्ण स्टेज का अनुभव करेंगे और कब स्वयं को सम्पूर्णता से बहुत दूर अनुभव करेंगे।... कब 100 के मणके के समान चमकेगा कब अपनी कमज़ोरियों की माला बाप के आगे बार-2 सुमिरण करेगा। (अ.वा. 6.1.79 पृ.181 आदि, 182 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
46	क्षत्रियों का सदा तीर-कमान के बोझ उठाने का खेल। हर समय पुरुषार्थ की मेहनत का कमान है ही है। एक समस्या का समाधान करते ही हैं तो दूसरी समस्या खड़ी हो जाती। ब्राह्मण सदा समाधान स्वरूप हैं। क्षत्रिय बार-2 समस्या को समाधान करने में लगे हुए रहते।... क्षत्रिय क्या करत भये। इसकी कहानी है ना- चूहा निकालते तो बिल्ली आ जाती। आज धन की समस्या, कल मन की, परसों तन की वा संबंध-सम्पर्क वालों की। मेहनत में ही लगे रहते हैं। सदा कोई-न-कोई कम्प्लेंट ज़रूर होगी। चाहे अपनी हो, चाहे दूसरों की हो। (अ.वा.3.5.84 पृ.289 मध्य)	<a href="#">Download</a>
47	जो माया से हार खाते उनको क्षत्रिय कहा जाता है। (मु. 21.10.68 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
48	एक भारत ही है जिसने किसका भी राज्य छीना न है। (मु. 6.9.75 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>

49	भारत में कोई भी आवेगा तो भारतवासी उनको पनाह देंगे। (मु. 22.6.65 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
50	चन्द्रवंशी राम को बाण आदि दिए हैं। वास्तव में ज्ञान बाण की बात है। वह नापास हुआ इसलिए निशानी दे दी है। (मु. 2.12.82 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
51	अब रामचन्द्र की पूजा करते हैं, उनको यह भी पता नहीं है कि राम कहाँ गया। तुम जानते हो कि राम की आत्मा तो ज़रूर पुनर्जन्म लेती रहती होगी। यहाँ इस्तहान में नापास होती है। परन्तु कोई न कोई रूप में होगी तो ज़रूर ना। यहाँ ही पुरुषार्थ करते रहते हैं। इतना नाम बाला है राम का, तो ज़रूर आयेंगे, उनको नालेज लेनी पड़ेगी।... वह तो ज़रूर पढ़ते होंगे। अपनी बैटरी चार्ज करते होंगे। (मु. 19.9.89 पृ.1 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
52	वाममार्ग विकारी मार्ग को कहा जाता है। (मु. 29.4.70 पृ.3 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
53	भल पतित बनना है वह तो कायदा है एक स्त्री से ही पतित बनें। दूसरा कोई से पतित बनना बेकायदे है। (मु. 8.10.68 पृ.1 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
54	पतित मनुष्यों को कहा जाता है कामी कुत्ता। कोई एक स्त्री होते दूसरी करता है तो कहा जाता है यह तो कामी कुत्ता है। रात-दिन विकार में ही फंसा हुआ है। (मु. 15.10.68 पृ.1 आदि)	<a href="#">Download</a>
55	काम कटारी का काँटा लगाते हैं। काम कटारी का काँटा लगाना यह तो जंगली जानवरों का काम है। एक दो को दुःख देते हैं ना। (मु. 13.4.69. पृ.1 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
56	हरेक धर्म वालों की सिकल आदि अलग है। कोई सीदी(काले), कोई गोरे। (मु. 3.5.70 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
57	इस्लामी देखो कितने काले हैं। इनकी भी फिर बहुत ब्रान्चेज निकलती रहती हैं। मुहम्मद तो बाद में आता है। पहले हैं इस्लामी। (मु. 27.8.69 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
58	विकारी को पतित कहना, भ्रष्टाचारी कहना बात एक ही है। पतित,भ्रष्टाचारी माना विकार में जाने वाला। क्रोधी को पतित भ्रष्टाचारी नहीं कहा जाता है। (मु. 15.11.66 पृ.1 आदि)	<a href="#">Download</a>
59	आगे मनुष्यों की बलि चढ़ती थी। वह भी गवर्मेंट ने बंद किया है। मनुष्यों के माँस को महाप्रसाद समझ बाँटते थे, वह फिर खाते भी थे। अभी बकरे का महाप्रसाद समझते हैं। (मु. 8.11.68 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
60	संन्यासी तो आते ही बाद में हैं। इस्लामी, बौद्धी के भी बाद में आते हैं। क्रिश्चियन से कुछ पहले आते हैं। (मु. 17.11.74 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
61	यहाँ तुम बाप के संग बैठे हो तो अच्छा समझते हो। बाहर जाने से संग में पता नहीं फिर क्या हाल होगा। संगदोष तो बहुत होता है ना।... बाहर में तो मनुष्य क्या-2 खाते रहते हैं। खास चीनी लोग का खान-पान बड़ा गंदा होता है। (मु. 14.11.71 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>

62	तुम डबल अहिंसक हो। न मारते हो अर्थात् न किस पर गुस्सा करते हो। न काम-कटारी चलाते हो। नॉनवाइलेन्स तुम हो। नम्बरवन हिंसा है काम-कटारी चलाना। दुनिया में कोई नहीं जानते कि पहला नंबर दुश्मन कौन है। (मु. 30.8.73 पृ.4 मध्य)	<a href="#">Download</a>
63	इस समय यह अमेरिका, रशिया आदि जो हैं, यह सभी माया का भभका है।... 100 वर्ष में यह सभी हुए हैं।... यह है रुपय के पानी मिसल राज्या। इसको माया का पॉम्प कहा जाता है।... देह अहंकार तोड़ना चाहिए। (मु. 21.3.72 पृ.2 अंत, 3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
64	क्राइस्ट जब आया उनके पीछे उनकी आत्माएँ आती गईं। उन्हीं के पास क्या था? कुछ भी नहीं। जंगल में नंगे रहते थे। पत्तों के कपड़े पहनते थे। उस समय विकार की चेष्टा नहीं रहती थी। (मु. 1.3.73 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
65	पहले-2 क्राइस्ट आदि यूरोप तरफ चले गए। (मु. 26.7.71 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
66	जिन्होंने मूसल निकाले हैं वह अभी अपने कुल का नाश करने एक/दो को धमकी दे रहे हैं। हैं सब क्रिश्चियन लोग। वही यूरोपवासी यादव ठहरे। (मु. 16.2.74 पृ.1 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
67	सबसे खौफनाक मनुष्य कौन-सा होता है, जिनसे सब डर जाते हैं? दुनिया की बात तो दुनिया में रही; लेकिन इस दैवी परिवार के अंदर सबसे खौफनाक नुकसान कारक वो है जो अंदर एक और बाहर से दूसरा रूप रखता है। वो परनिन्दक से भी जास्ती खौफनाक है; क्योंकि वो कोई के नज़दीक नहीं आ सकता, स्नेही नहीं बन सकता। उनसे सब दूर रहने की कोशिश करेंगे। (अ.वा. 28.9.69 पृ.110 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
68	क्रिश्चियन की बुद्धि पत्थरबुद्धि नहीं है, जितनी यहाँ वालों की है। वे सुख भी कम तो दुख भी कम पाते हैं।... उन्हीं की न पारस बुद्धि, न पत्थरबुद्धि होती है।... साइंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चियन से ही निकला है। (मु. 11.4.68 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
69	क्रिश्चियन लोग खुद भी समझते हैं- हमको कोई प्रेर रहा है, हम अपने ही विनाश के लिए बनाते हैं। कहते हैं हम ऐसे-2 बॉम्ब बना रहे हैं, जो एक दुनिया तो (क्या) 10 दुनियाओं को भी एक बॉम्ब से खत्म करेंगे। (मु. 23.3.68 पृ.4 आदि)	<a href="#">Download</a>
70	क्रिश्चियन लोग के जन्म कितने होंगे, करके 40 जन्म होंगे। (मु. 17.2.71. पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
71	क्राइस्ट को 2000 वर्ष हुए। अब हिसाब करो एवरेज कितने जन्म हुए? 30/32 जन्म होंगे। यह तो क्लीयर है। (मु. 22.11.71. पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>

72	अभी इनसे तो कोई भारत को ताकत नहीं मिल सकती है। ताकत मिले तब जबकि गृहस्थ-व्यवहार में रह करके (पवित्र रह दिखाएँ)। (इसमें) हिम्मत चाहिए। वो तो हो गए कायर संन्यासी जो घर-बार छोड़कर जाते हैं और ही क्रियेशन को विधवा बनाकर जाते हैं, नर्क में डालकर चले जाते हैं। (मु. 28.4.64 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
73	संन्यासी न होते तो फिर यह भारत बहुत भ्रष्टाचारी बन जाता। संन्यासी थमाने के लिए आते हैं। तो संन्यासियों की भी तो महिमा है ना। तो जैसे महिमा है देवी-देवताओं की, तैसे महिमा है संन्यासियों की। (मु. 8.9.64 पृ.5 आदि)	<a href="#">Download</a>
74	वास्तव में साधु-संन्यासियों आदि को तो भक्ति करना भी निषेध है। वह हैं ही निवृत्तिमार्ग वाले। तुम समझा सकते हो भक्ति तो है ही प्रवृत्तिमार्ग वालों के लिए। वह निवृत्तिमार्ग वाले जंगल में क्या भक्ति करेंगे। आगे यह भी सतोप्रधान थे तो सब कुछ उन्हीं को जंगल में पहुँचाते थे। अभी तो देखो कुटियाएँ खाली पड़ी हैं; क्योंकि तमोप्रधान बनने कारण कोई उन्हीं को पहुँचाता ही नहीं है। भक्तों की श्रद्धा ही नहीं रही। तो अब तो धंधेधोरी में लग गये हैं। करोड़पति पदमपति हैं। (मु. 20.1.79 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
75	भारत पतित होने लगता है तो संन्यासी आकर थमाते हैं। इसकी सेवा का उनको फल मिलता है जो गवर्मेन्ट के भी गुरु बनते हैं। (मु. 13.5.73. पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
76	संन्यासी तो समझते हैं अभी हम अपन को राँग मान लेवें तो सभी फॉलोवर्स हमको छोड़ देंगे। रिवोल्युशन हो जाए। इसलिए अभी संन्यासी लोग समझते तुम्हारी मत पर चल अपनी राजाई नहीं छोड़ेंगे। पिछाड़ी में कुछ समझेंगे। अभी नहीं। (मु. 5.9.70 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
77	हर आत्माओं के साथ सम्पर्क में आते हुए संस्कारों को मिलाना यह भी इतना सहज अनुभव हो, जैसे भाषण करना सहज है।... मुश्किल समझने के कारण उस समय क्या करते हैं? जैसे कहावत है-“दूरबाज़ खुशबाज़ तो उसी समय अपने को उस बात से दूर कर देते और किनारा कर लेते हैं। इसको भी कौन-से मार्ग की निशानी कहेंगे? निवृत्तिमार्ग वालों की। उस समय के लिए निवृत्त हो जाते हैं।... जैसे कमल का पुष्प निवृत्ति मार्गवाला नहीं है, पूरी ही प्रवृत्ति की निशानी है। इसी प्रकार प्रवृत्तिमार्ग वाले कभी दूर नहीं भागेंगे; लेकिन संगठन में आते हुए और सम्पर्क में आते हुए मुश्किल को सहज बनाएँगे। यह है आप विशेष आत्माओं का परिचय। (अ.वा. 9.4.73 पृ.20 मध्य पृ. 21 आदि )	<a href="#">Download</a>
78	बाप कहते हैं- तुम हमारी कितनी ग्लानि करते हो! सर्वव्यापी कह कितनी बाप की इनसल्ट, डिफेम करते हो। अभी केस कौन चलावे? बाप आकर केस चलाते हैं। (मु. 16.1.69 पृ.3 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>



79	ईश्वर को सर्वव्यापी कहना यह तो सभी से बड़ा पाप है। भगवान को गाली देते हैं। जज आदि की कोई इज्जत लेते हैं तो उनको फट से दण्ड दे देते हैं। केस आदि भी नहीं चलाते हैं। भगवान को भी बेइज्जत करते हैं तो दण्ड मिल जाता है। बड़ा पाप बन जाता है। (मु. 26.11.68 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
80	जो कुछ भी सुनाते हैं झूठा ईश्वर सर्वव्यापी कहाँ लिखा हुआ है? मनुष्य नाम लेते हैं गीता का। गीता में तो भगवानुवाच है कि मैं बहुत जन्मों के भी अंत में साधारण तन में प्रवेश करता हूँ। तो फिर सर्वव्यापी हूँ- यह कैसे कहेंगे। (मु. 24.11.67 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
81	यह तो जानते हो सबका पापों का घड़ा भरा हुआ है। उसमें संन्यासी उदासी सब आ गये। ऐसा कोई कह न सके कि संन्यासी आदि सभी से जास्ती पतित न हैं। संन्यासियों को खुद भी पता नहीं है। वह क्या जाने हम राँग रास्ते पर हैं। पूछो, यह कहाँ सुना है कि ईश्वर सर्वव्यापी है? तो फिर कह देते गीता में है भगवानुवाच्य। (मु. 4.5.75 पृ.1 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
82	अभी तुम बच्चे जानते हो बाप क्या समझाते हैं और गीता में क्या लिख दिया है। सुनाते क्या हैं। कहते भगवानुवाच, मैं सर्वव्यापी हूँ। बाप कहते हैं, मैं अपन को ऐसे गाली कैसे दूँगा कि मैं सर्वव्यापी हूँ। कुत्ते-बिल्ले सभी में हूँ। मुझे तो ज्ञान सागर कहते हो। मैं अपन को फिर कैसे कहूँगा। कितनी झूठ है। (मु. 13.5.70 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
83	कहेंगे कि संन्यासियों में तो पवित्रता का गुण है; परन्तु वह तो कह देते कि ईश्वर सर्वव्यापी है। गीता कृष्ण ने गाई है। यह कहना कितनी अपवित्रता है। इससे सभी का बुद्धियोग बेहद के बाप से टूट जाता है। सचखण्ड स्थापन करने वाला कृष्ण नहीं है। कृष्ण तो सच खण्ड में रहने वाला है। सचखण्ड स्थापन करने वाला एक बाप है। उल्टी बात बतलाने से मनुष्य मात्र निर्धन के बन पड़े हैं। (मु. 22.12.82 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
84	साधु अक्षर बेमाना, उनसे बेहतर मेहतर जो खाते मेहनत का खाना। (मु. 7.1.70 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
85	इन संन्यासियों आदि को अपना नशा कितना रहता है। वह पहले-2 नज़र रखते हैं साहूकारों में। बाबा पहले-2 नज़र रखते हैं गरीबों पर। गरीब निवाज़ है ना। (मु. 28.6.70 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
86	हठयोगी निवृत्तिमार्ग वाले संन्यासी कब प्रवृत्तिमार्ग वालों को राजयोग सिखा नहीं सकते। (मु. 20.1.74 पृ.4 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
87	शंकराचार्य आदि यह सब भक्त हैं ना। उन्हीं को कहेंगे पवित्र भक्त। भक्ति कल्ट तो है ना। जो पवित्र रहते हैं, (उन्हीं के) बड़े-2 अखाड़े बने हुए हैं। उनका मान कितना है। (मु. 9.11.66 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
88	संन्यासी एक तरफ पवित्र रह भारत को मदद करते हैं, दूसरी तरफ बाप से बेमुख कर देते हैं। (मु. 20.2.83 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>

89	कलियुगी गुरु लोग कह देते श्री-श्री 108 जगत गुरु। इसके लिए फिर बाबा ने समझाया है जब अपन को परमात्मा समझ अपनी पूजा बैठ कराते हैं तो उनको हिरण्याकश्यप कहते हैं। (मु. 18.8.73 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
90	जिनको संन्यास धर्म में जाना है वह घर में ठहरेंगे नहीं। उनसे संन्यासी बनने का पुरुषार्थ जरूर होगा। (मु. 7.1.87 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
91	सबसे जास्ती कुंभकरण कौन? जिन कुंभकरणों का मेला लगता है, जो अज्ञान नींद में सोए हुए हैं। (मु. 7.1.87 पृ.1 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
92	यह मुफ्त में खा-पी खलास कर देते हैं। जैसे मकर टिड्डी आए फसल को खा चले जाते हैं। यह साधु-संत भी मकर हैं।... बाप समझाते हैं कि यह भक्तिमार्ग के अनेक गुरु हैं। (मु. 10.5.68 पृ.2 मध्य रात्रि.)	<a href="#">Download</a>
93	दुर्गति कौन करता है? जरूर यह गुरु लोग ही करेंगे। (मु. 24.8.74 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
94	सबसे जास्ती दुख देने वाला (रावण) कौन है?... बाप कहते हैं इन गुरुओं ने परमात्मा की महिमा गुम कर दी है। (मु. 20.1.98 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
95	सन्यासियों को वास्तव में इतने पैसे इकट्ठे करने का (लॉ) नहीं। सभी कुछ छोड़ा फिर इतने पैसे क्यों रखते? (मु. 5.1.72 पृ. 3 अंत)	<a href="#">Download</a>
96	इन संन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है।... यह संन्यास धर्म नहीं होता तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। (मु.22.6.91 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
97	देखो, मुहम्मद गज़नवी ने मंदिर को लूटा था ना। अगर उनको यह मालूम होता कि हमारे बाप का मंदिर है तो लूटेंगे थोड़े ही। (मु. 28.10.72 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
98	सभी मनुष्य मात्र आयरन एजड हैं। पत्थर ही निकालते रहते। झूठ बोलने वाले के लिए कहते इनका मुँह काला है। (मु. 24.3.73 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
99	भारत कितना सॉलवेन्ट था। हीरे-जवाहिरों के महल थे।... सोमनाथ का मन्दिर था ना। एक मन्दिर तो नहीं होगा। यहाँ भी शिव के मन्दिर, ल.ना. के मंदिर ढेर हैं ना। वहाँ भी राजाएँ मंदिर बनाते हैं, जो साहूकार होते हैं। सोमनाथ के मंदिर में इतने तो हीरे जवाहिर थे जो मुहम्मद गज़नवी ऊँट भरकर ले गए। इतने माल थे। ऊँट तो क्या कोई लाखों ऊँट ले आए तो भी भर न सके। सोने, हीरे-जवाहिरों के तो अनेक महल थे। मुहम्मद गज़नवी तो अभी आया। (मु. 21.6.75 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>

100	माथा कौन टेकते हैं? भेड़िया। मुसलमानों की ईद में देखो रंग-बिरंगे कपड़ों वाले माथा नीचे कर नमाज़ पढ़ते हैं। अगर कोई उस समय देखे तो ऐसा लगता है जैसे भेड़ियों का झुण्ड बैठा हो। अगर कोई उनका फोटो देखे तो कोई नहीं कहेगा कि यह मनुष्य हैं। भेड़ियों का झुण्ड दिखाई पड़ता है। (मु. 8.10.65 पृ.6 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
101	स्वर्ग में हीरों जवाहरों के कितने महल थे। भक्तिमार्ग में भी कितना धन था। जो सोमनाथ का मंदिर बनाया है। एक-2 पत्थर चार लाख कीमत वाले थे। वो सब कहाँ चले गये हैं। कितने लूटकर ले गये। मुसलमानों ने भी जाकर मस्जिदों में लगा दिये हैं। इतना अथाह धन था। (मु. 26.2.67 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
102	लोभ वाला ज़रूर कुछ चोरी कर खाता होगा। यह तो शिवबाबा का भण्डारा है। इससे तो पाई की भी चोरी नहीं करनी चाहिए। यह ब्रह्मा तो ट्रस्टी है। बेहद का बाप भगवान तुम्हारे पास आया है। भगवान के घर में कब कोई चोरी करता होगा? स्वप्न में भी नहीं। (मु. 9.7.68 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
103	लोभ रखना चाहिए- बेहद के बाप से वर्सा लेने का और कोई चीज़ का लोभ नहीं। नहीं तो सारा बुद्धियोग उसमें चला जाता है। (मु. 27.10.82. पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
104	दुश्मन आते हैं क्यों? धन के पिछाड़ी। भारत में इतने सब अंग्रेज़, मुसलमान क्यों आये? पैसा देखा। पैसे बहुत थे। अब पैसे नहीं हैं। तो और कोई है नहीं। पैसे ले खाली कर गये। (मु. 1.8.84 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
105	मुसलमानों को 300/400 वर्ष हुआ होगा। इनके पहले नहीं कहेंगे कि घोर-अंधियारा था। कोई खिटपिट न थी। (मु. 26.2.73. पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
106	सत्य तो एक बाप है, जो ही सच्ची कथा सुनाए हमको विजय पहनाते हैं। यह है सब बातें। बच्चे अच्छी रीति समझते हैं तो मास्टर नॉलेजफुल बनते जाते हैं। कबसे नॉलेज सुनना शुरू किया है, इतनी सब मुरलियों के कागज़ रखें तो यह सारा महल भर जावे। कितने कागज़ खपाय होंगे और खपावेंगे। बच्चों पास ज़रूर जावेंगे। लिथो होते रहेंगे। बहुत कॉपियाँ निकलेंगे। झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। (मु. 22.6.64 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
107	मुसलमानों का मज़हबी पागलपना यह पुराना है। (मु. 13.5.72 पृ.3 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
108	मुसलमानों के बहुत हैं। अमेरिका (अफ्रीका) में कितने साहकूर हैं। सोने हीरों की खानियाँ हैं। जहाँ बहुत धन देखते हैं तो उस पर चढ़ाई कर धनवान बनते हैं। क्रिश्चियन लोग भी कितने धनवान बनते। भारत में भी धन है; परंतु गुप्त। (मु.27.8.69 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
109	पहले-2 है देवी-देवता धर्म, सेकेंड नम्बर में फिर है सिक्ख धर्म। इसलिए सिक्ख धर्म बहुत नया है; क्योंकि ब्रदर्स-सिस्टर्स हैं। (मु. 10.8.73 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>

110	प्रवृत्तिमार्ग दूसरे नम्बर में गुरु नानक का चला है। पंजाब में महाराजा-महारानी भी हुए हैं। (मु. 9.8.73 पृ.1 अंत रात्रि.)	<a href="#">Download</a>
111	गुरुनानक 500 वर्ष पहले आया। ऐसे तो नहीं सिक्ख लोग कोई 84 जन्म का पार्ट बजाते हैं। बाप कहते हैं 84 जन्म सिर्फ तुम ऑलराउण्डर ब्राह्मणों के हैं... सिक्ख लोगों के कितने जन्म होते होंगे? एवरेज आयु 50 वर्ष लो तो 10/12 जन्म लेते होंगे। अर्थात गुरुनानक के भी 10 जन्म होंगे। कृष्ण के लिए कहेंगे 84 जन्म, गुरुनानक के लिए कहेंगे 10 जन्म... यह बुद्धि का काम है ना। (मु. 30.12.88. पृ.1 अंत पृ.2 आदि )	<a href="#">Download</a>
112	गुरुनानक ने भी भगवान की महिमा गाई है कि वह आकर मूत-पलीति कपड धोते हैं। जिसकी ही महिमा है एकोअंकार... शिवलिंग के बदले अकाल तख्त निशान रख दिया है। (मु. 12.3.76. पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
113	तुम सिक्ख लोगों को भी समझा सकते हो। ग्रंथ में तो पूरा वर्णन है। और कोई शास्त्र में इतना वर्णन नहीं है जितना ग्रंथ जप साहेब, सुखमणी में है। अक्षर ही दो हैं। बाप कहते हैं साहेब को याद करो तो तुमको 21 जन्मों लिए सुख मिलेगा। इसमें मूँझने की कोई बात नहीं। बाप सहज करके समझाते हैं। कितने हिन्दू ट्रान्सफर हो जाकर सिक्ख बने हैं। (मु. 15.12.67 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
114	काँग्रेस को कोई कौरव कहा तो ये कोई इनसल्ट नहीं है। वो अर्थ को समझते ही नहीं हैं और यहाँ तो राइट अक्षर दिया जाता है ना।... कौरव का अर्थ ही है काँग्रेस। ये पंचायती राज्य को ही तो काँग्रेस कहा जाता है ना। तो कुरु जो थे वो पंचायती राज्य थे। (मु.7.9.65 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
115	आर्य समाजी लोग देवताओं के चित्रों को नहीं मानते हैं। तुम्हारे पास चित्र देखते हैं तब ही बिगड़ते हैं। (मु. 5.11.71 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
116	अपने धर्म में रहना चाहिए। पर-धर्म दुख देने वाला है। (मु. 16.2.73 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
117	कहा जाता है रिलीजन इज़ माइटा। आत्मा के स्वधर्म में टिकना है। इससे ही ताकत मिलती है। (मु. 19.2.68 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
118	यह कौरव गवर्मेन्ट प्रजा का 'अंधेरी नगरी, चौपट राजा, टके सेर भाजी, टके सेर खाजा'- यह बात हो जाती है। (मु. 26.9.63 पृ.6 अंत)	<a href="#">Download</a>
119	प्रजा का प्रजा पर राज्य बेकायदे है। (मु. 4.2.67 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
120	गवर्मेन्ट भी धर्म को नहीं मानती। अपने धर्म को भूल गये हैं। उनका नाम ही है, कौरव गवर्मेन्ट इरीलिजीयस, अनराइटियस। अनराइटियस है तो अनलॉफुल भी है। अनलॉफुल है तो इनसॉलवेन्ट है। (मु. 16.7.73 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>

121	गाँधी का नाम ज़रूर लेना; क्योंकि गाँधी को तो अवतार मानते हैं ना। बहुत अवतार मानते हैं। भला अवतार क्यों मानते हैं? अवतार तो सबको मानते हैं। जो-2 धर्म की स्थापना करते हैं, उनको यह लोग अवतार मानते हैं। क्राइस्ट को किसका अवतार मानेंगे? क्रिश्चियन धर्म का। बौद्ध(बुद्ध) को किसका अवतार मानेंगे?... बुद्ध (बौद्ध धर्म) स्थापन करने। यह भी अवतार मानते हैं। पर क्या अवतार मानते हैं? क्या किया? इन्होंने आ करके कौरव राज्य स्थापन किया यानी प्रजा का प्रजा पर राज्य स्थापन किया। होना चाहिए ना नहीं तो कौरव-पांडव आए कहाँ से? (मु. 26.9.63 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
122	काँग्रेसियों ने फिरंगियों को निकाला तो राजाओं से भी राजाई छीन ली। राजा नाम ही गुम कर दिया है। (मु. 11.1.73 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
123	महाराजा का टाइटल तो गया, फिर भी चाहे तो कांग्रेस (गवर्मेंट) को लाख-दो (प्रजा) देवे तो टाइटल कायम हो सकता है। (मु.12.6.74 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
124	बाप की भी निंदा कराने वाले, लून-पानी होने वाले ठौर न पाएँ। वह आसुरी बन जाते हैं। उनको नास्तिक भी कहा जाए। आस्तिक होने से कब लड़ न सके। न लड़ना यहाँ ही सीखना है। जो फिर 21 जन्म आपस में प्रेम रहेगा। (मु. 31.7.68 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
125	बाकी कोई से आँख लगाना, बाइसकोप देखना यह सब व्यर्थ टाइम गँवाना है। बाप कहते हैं अशरीरी बन मुझे याद करो। अगर बाप का फरमान नहीं मानते तो गोया नास्तिक ठहरे। (मु. 4.11.69 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
126	रिज़ल्ट आऊट बापदादा मुख द्वारा नहीं करेंगे या कोई कागज़ व बोर्ड पर नम्बर नहीं लिखेंगे; लेकिन रिज़ल्ट आऊट कैसे होगी? आप स्वयं ही स्वयं को अपनी योग्यताओं के प्रमाण अपने2 निश्चित नंबर के योग्य समझेंगे और सिद्ध करेंगे। ऑटोमेटिकली उनके मुख से स्वयं के प्रति फाइनल रिज़ल्ट के नम्बर न सोचते हुए भी, उनके मुख से सुनाई देंगे और चलन से दिखाई देंगे। (अ.वाणी 27.5.74 पृ.56 अंत,पृ.57 आदि )	<a href="#">Download</a>
127	पार्ट बजाना ही अपना पार्ट वा अपना नम्बर प्रत्यक्ष करना है। बापदादा ऐसे नम्बर नहीं देंगे; लेकिन पार्ट ही प्रत्यक्ष कर रहा है। (अ.वाणी 30.7.83 पृ.2 44आदि)	<a href="#">Download</a>
128	अधर्मी जो होते हैं वो अनराइटियस काम ही करते हैं। (मु. 16.7.65 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
129	यज्ञ कुंड से स्थापना के साथ-2 विनाश ज्वाला भी प्रज्वलित हुई। तो विनाश ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले कौन? बाबा ने बताया- ब्रह्मा, बाप और ब्राह्मण बच्चे। (अ.वा. 3.2.74 पृ.13 अंत)	<a href="#">Download</a>

130	रावण जब (सत्ता में) आते हैं तो पहले-2 घर (भारत) में से लड़ाई शुरू होती है। जुदा-2 हो जाते हैं। आपस में ही लड़ मरते हैं। अपना-2 प्राविंस (ज़ोन) अलग कर देते हैं। (मु. 8.8.70 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
131	बाप ने समझाया है कि दोनों का जन्म, परमपिता-परमात्मा जिसको राम भी कहते हैं और फिर जो दुश्मन है जो फिर तुम्हारे से जीत पहन लेते हैं, राज्य छीन लेते हैं, वो रावण का भी जन्म यहीं है। (मु. 6.1.66 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
132	झगडा होता ही है विकार पर। (मु. 6.8.76 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
133	शास्त्रों में तो पांडवों के लिए भी दिखाया है कि पहाड़ों पर गये तो साथ में कुत्ता भी ले गये। फिर वहाँ ही गल मरे। कुत्ते की महिमा सुनकर यहाँ बहुत मनुष्य कुत्ता भी पालते हैं। उनसे इतना तो प्यार करते हैं कि बात मत पूछो।... बाप को पता पड़ता है कि इसने खराब काम किया है तो कहते हैं ना कि तुम तो कामी कुत्ते हो। कुत्ते को लज्जा शर्म नहीं होता है। (मु. 10.10.69 पृ.4 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
134	बच्ची खेल तो सिर्फ 10/15 मिनट का ही था।... कुछ समय बाद कर्मभोग (दर्द) तो बिल्कुल निर्बल हो गया। बिल्कुल दर्द गुम हो गया। (अ.सं. 18.1.69 पृ.8 अंत पृ.9 आदि )	<a href="#">Download</a>
135	किस समय स्नेहमूर्त, किस समय शक्ति रूप बनना है, यह भी सोचना है। इन सभी बातों में शक्तिरूप की आवश्यकता है।... स्नेह बापदादा और दैवी परिवार से करना है। बाकी सभी से शक्तिरूप से सामना करना है। (अ.वा. 18.5.69 पृ.63 मध्य)	<a href="#">Download</a>
136	मम्मा-बाबा को भी ड्रिल सिखलाते थे। डायरैक्शन देती थीं ऐसे-2 करो। टीचर हो बैठती थीं। हम समझते थे यह तो बहुत अच्छा नं. माला में आवेंगी। वो भी गुम हो गये। यह सब समझना पड़े ना। हिस्ट्री तो बहुत बड़ी है। (मु. 28.5.74 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
137	10 वर्ष (साथ में) रहने वाले ध्यान में जाय मम्मा-बाबा को भी ड्रिल कराते थे। हेड होकर बैठते थे। उनमें बाबा प्रवेश कर डायरैक्शन देते थे। (मु. 27.7.67 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
138	भारत माता शिव शक्ति अवतार अंत का यही नारा है। (अ.वा. 21.1.69 पृ.24 आदि)	<a href="#">Download</a>
139	बच्चे जानते हैं यह राजधानी स्थापन हो रही है और जो धर्म स्थापन करते हैं उन्हीं की पहले राजाई नहीं चलती है। राजाई तो तब हो जब 50/60 लाख करोड़ हों, तब लश्कर बने। शुरू में तो आते ही हैं एक/दो। फिर वृद्धि को पाते हैं। तुम जानते हो क्राइस्ट भी कोई वेश में आवेंगे बेगर रूप में। पहला नम्बर वाला ज़रूर फिर लास्ट नम्बर में होगा। (मु. 3.12.68 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>

140	और कोई धर्म में शुरू से राजाई नहीं चलती है। वह तो धर्म स्थापन करते हैं। फिर जब लाखों की अन्दाज में हो तब राजाई कर सके। यहाँ तो बाप राजाई स्थापन कर रहे हैं। (मु. 24.8.75 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
141	अनपढ़े पढ़े आगे भरी ढोवेंगे। नौकर-चाकर जाकर बनेंगे। जो ब्राह्मण नहीं बनते हैं तो वह प्रजा में पाई पैसे का पद पा लेंगे... और कोई धर्म स्थापन करने वाला राजाई स्थापन नहीं करते। बेहद का बाप ही है जो भविष्य सतयुग के लिए राजधानी स्थापन करते हैं। (मु. 6.11.72 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
142	और धर्म स्थापक कोई राजाई नहीं स्थापन करते हैं। उनको तो गुरु भी न कहना चाहिए। वह सद्गति नहीं देते। आते हैं, सिर्फ अपना धर्म स्थापन करने। वह भी जब तमोप्रधान बन जाते हैं तो फिर बाप को आना पड़ता है तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने। (मु. 24.1.70 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
143	धर्म स्थापन किया। बसा जो शिक्षा दी उसके फिर शास्त्र बने। जो धर्म स्थापन करते हैं उनको फिर पालना ज़रूर करनी है। वापिस कोई जाता नहीं। सभी इस समय कब्रदाखिल हैं। पहले नम्बर में लक्ष्मी-नारायण को देखो वह भी अब कब्रदाखिल हैं। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण रचते हैं, फिर यह जाकर राधे-कृष्ण बनेंगे। जब तक शिवबाबा न आये तब तक कोई पावन बन न सके। बलिहारी उस एक की है। उनकी ही महिमा है। (मु. 17.2.72 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
144	और धर्म स्थापक और बाप की धर्म स्थापना में रात-दिन का फर्क है। (मु.18.11.70 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
145	ऊँच-ते-ऊँच बाप को ज़रूर ऊँच-ते-ऊँच में ही प्रवेश करना चाहिए। (मु. 11.2.69 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
146	अन्दर की प्यार की और बाहर की प्यार की बाबा पास बहुत युक्ति है। (मु.29.3.68 पृ.4 अंत)	<a href="#">Download</a>
147	बाबा ने समझाया है धर्म स्थापन करने अर्थ ऊपर से जो आत्माएँ आती हैं वो ज़रूर सतोप्रधान, श्रेष्ठाचारी होंगी। भल माया का राज्य है; परन्तु पहले आने वाले ज़रूर सतोप्रधान होंगे, तब तो उनकी महिमा होती है। फिर सतो-रजो-तमो में आते हैं। (मु. 9.8.64 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
148	सतोप्रधान आत्मा को सज़ा अथवा दुख कैसे मिल सकता है? (मु. 22.8.69 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
149	हाँ, धर्म स्थापक दूसरे के शरीर में आ सकते हैं। फिर उनका नाम होता है। पवित्र आत्मा आकर प्रवेश करेगी। जो है वह धर्म स्थापन नहीं करेगी। जो आत्मा प्रवेश करेगी वह स्थापना करेगी। सितम आदि पहली-2 आत्मा सहन करती है। (मु. 11.12.77 पृ.2 आदि, 9.12.87 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
150	जो भी 500 करोड़ आत्माएँ हैं वह सभी को सद्गति देने आया हूँ। ड्रामा अनुसार सभी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपने-2 सेक्शन में चले जाते हैं। (मु. 4.4.68 पृ.4 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>

151	शास्त्रों (में) फिर लिख दिया है श्राप दिया तो पत्थर बन गया। (मु. 21.3.68 पृ.4 आदि, 22.3.74 पृ.4 आदि)	<a href="#">Download</a>
152	कोई वेश्या है, भल जन्म अच्छे घर में ले फिर भी संस्कार अनुसार वह वेश्या तरफ ही चली जावेगी।... बड़े-2 आदमियों की गुप्त रहती है। ज्ञान में आने से भी तो संस्कार बदलते नहीं तो समझते हैं कि यह शायद वेश्या होगी। (मु.14.5.73 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
153	वेश्याएँ भी पुरुषार्थ कर माला का दाना भी बन सकती हैं। (मु. 31.1.74 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
154	यूरोपवासी यादव, भारतवासी कौरव और पाण्डव। वह सभी एक तरफ हैं, इस तरफ दो भाई-2 हैं।... कौरव और पाण्डव एक ही घर के थे। (मु. 22.10.71 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
155	यादव हैं मूसल इन्वेंट करने वाले और कौरव-पाण्डव भाई-2 थे। वह आसुरी भाई, यह दैवी भाई। यह भी आसुरी थे। उन्हों को बाप ने ऊँच बनाकर दैवी भाई बनाया है। (मु. 2.11.78 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
156	समझाना चाहिए तीन सेनाएँ तो बरोबर खड़ी हैं। विनाश काले विपरीत बुद्धि तो खलास हुये थे। कौरवों और यादवों की है विनाश काले विपरीत बुद्धि। बाकी जिनकी प्रीत थी भगवान के साथ वह स्वर्ग के मालिक बन गये। (मु. 27.7.73 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
157	पाण्डव उनको कहा जाता है जो बाप को जानते हैं, बाप से प्रीत बुद्धि हैं। कौरव उनको कहा जाता है जो बाप से विपरीत बुद्धि हैं। (मु. 25.12.68 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
158	पाण्डवों का गायन है! सेवा करने में बहुत मज़बूत रहे हैं; इसलिए वह मज़बूत शरीर दिखाते हैं; लेकिन हैं मज़बूत दिल वाले, मज़बूत मन वाले। वह मन व दिल कैसे दिखाएँ? इसलिए शरीर (बड़ा-2) दिखा दिया है। (अ.वा. 21.10.87 पृ.99 अंत, 100 आदि)	<a href="#">Download</a>
159	(ज्ञान) चन्द्रमा का गुण है शीतल (ज्ञान) प्रकाश देना। (अ.वा. 15.9.69 पृ.105 अंत)	<a href="#">Download</a>
160	ब्रह्मा का पार्ट स्थापना के कार्य में अंत तक नूँधा हुआ है। (अ.वा. 30.6.74 पृ.83 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
161	(धर्म) युद्ध सिखाने वाले का नाम युधिष्ठिर रख दिया है। (मु. 26.7.71 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
162	मैंने तुमको इस युद्ध के मैदान में खड़ा किया है, 5 विकारों से लड़ने लिए। (मु. 21.9.68 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
163	यह है युधिष्ठिर की औलाद; क्योंकि युद्ध के मैदान में आकर खड़ा करते हैं। अंधे (देहधारियों के भगत) जब आकर सुजाक बने तब युधिष्ठिर के बच्चे बने।(मु. 12.1.74 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>
164	“शंकर समान ज्वाला-रूप बनकर”(अ.वा. 3.2.74 पृ.13 अंत)	<a href="#">Download</a>



165	'ज्वाला देवी'(अ.वा.15.9.74 पृ.135 अंत)	<a href="#">Download</a>
166	आधा में जाम आधा में रैयत। (मु.21.3.68 पृ.4 मध्य)	<a href="#">Download</a>
167	लोगों को परखना और शक्तियों की रखवाली करना पाण्डवों का मुख्य कर्तव्य है। (अ.वा. 19.6.69 पृ.75 अंत)	<a href="#">Download</a>
168	पाण्डवों के चित्र कितने बड़े-बड़े बनाये हैं। इसका मतलब वह बड़े ही विशाल बुद्धि थे। बुद्धि बड़ी थी। उन्होंने फिर शरीर (और पेट) को बड़ा दिखा दिया है। (मु. 12.2.74 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
169	शरीर भल कैसा भी हो आत्मा प्रबल होनी चाहिए। (अ.वा. 5.12.89 पृ.61 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
170	किसी से घबराएँगे नहीं; परंतु उनके सामने आने वाले घबराएँगे। (अ.वा.13.3.71 पृ.47 अंत)	<a href="#">Download</a>
171	भील बाहर रहने वाला अर्जुन से भी तीखा गया। (मु. 4.1.74 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
172	शेर सभी से तीखा होता है। (काँटों के) जंगल में शेर अकेला रहता है। (देहाभिमानी) हाथी झुंड में रहते हैं, नहीं तो कोई भी मार दे। शक्तियों की भी शेर पर सवारी होती है। (मु. 4.3.73 पृ.3 मध्य)	<a href="#">Download</a>
173	बाप भी है गुप्ता। नॉलेज भी गुप्ता। तुम्हारा पुरुषार्थ भी है गुप्ता।(मु. 13.9.68 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
174	पांडव थे गुप्ता।(मु. 20.5.73 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
175	तुम्हारी जैसी विशाल बुद्धि और किसी की हो न सके। (मु. 12.2.74 पृ.3 अदि, मु. 10.3.69 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
176	जापान में वह (बौद्धि) लोग अपन को सूर्यवंशी कहलाते हैं। (मु. 28.1.75 पृ.1 अंत, 29.1.70 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
177	ज्ञान सूर्य के उदय होने पर सब कुछ स्पष्ट हो जावेगा। (अ.वा. 22.1.70 पृ.170 आदि)	<a href="#">Download</a>
178	न कुल का होगा तो समझेगा नहीं। हाँ, अंत में कहेंगे यह तो ठीक कहते थे। (मु. 25.4.73 पृ.4 आदि)	<a href="#">Download</a>
179	सिक्खों की ही डिनायस्टी प्रवृत्ति मार्ग की होती है। और सब हैं निवृत्ति मार्ग वाले।... स्थापना कर फिर बादशाही ली है। (मु. 9.10.73 पृ.4 मध्य)	<a href="#">Download</a>
180	प्रवृत्तिमार्ग दूसरे नं. में गुरुनानक का चला है। पंजाब में महाराजा-महारानी भी हुए हैं। (मु. रात्रि 9.8.73 पृ.1 अंत)	<a href="#">Download</a>
181	रावण का कोई चित्र थोड़े ही होता है। रावण का अर्थ ही है ये 5 विकार। (मु. 29.12.63 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>

182	मनुष्यों से पूछो- आखिर रावण है कौन? कब से इनका जन्म हुआ? कब से जलाते हो? कहेंगे अनादि है। (मु. 13.4.84 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
183	कोई भी विद्वान, शंकराचार्य आदि से पूछो रावण कौन है? कह देंगे यह तो कल्पना है। जानते ही नहीं तो और क्या रिस्पॉण्ड देंगे! (मु. 20.2.70 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
184	रावण के 10 सिर वाली आत्माएँ हर छोटी-सी परिस्थिति में भी कभी सहयोगी नहीं बनेंगी। क्यों, क्या, कैसे के सिर द्वारा अपना उल्टा अभिमान प्रत्यक्ष करती रहेंगी।... बार-2 कहेंगे यह बात तो ठीक है; लेकिन यह क्यों, वह क्यों? इसको कहा जाता है कि एक बात के 10 शीश लगाने वाली शक्ति। सहयोगी कभी नहीं बनेंगे, सदा हर बात में अपोज़िशन करेंगे। तो अपोज़िशन करने वाले रावण सम्प्रदाय हो गए ना। (अ.वा. 3.4.82 पृ.339 मध्य)	<a href="#">Download</a>
185	जैसे साकार बाप को सदा निश्चय और नशा रहा कि मैं भविष्य में विश्व-महाराजन बना कि बना। ऐसे विश्वकिशोर को भी यह नशा रहा कि मैं पहले विश्व महाराजन का पहला प्रिन्स हूँ। यह नशा वर्तमान और भविष्य का अटल रहा। तो समानता हो गई ना। जो साथ में रहे उन्होंने ऐसा देखा ना। (अ.वा. 18.1.86 पृ.166 अंत)	<a href="#">Download</a>
186	इन सभी सितारों में जास्ती खातिरी होती है कुमारका की। (मु.रात्रि 25.9.64, 19.8.73 पृ.4 आदि)	<a href="#">Download</a>
187	भ्रष्टाचारी भ्रष्टाचारियों का ही मान रखते हैं। बाप कहते हैं जिनका बहुत मान है वह बड़े-ते-बड़ा भ्रष्टाचारी समझो। (मु.8.4.72 पृ.2 मध्यादि)	<a href="#">Download</a>
188	यह पढाई है। इसमें जो जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ऊँच पद पावेंगे। यह कोई साधु-संत आदि नहीं, जिसकी गद्दी चली आई है। यह तो शिवबाबा की गद्दी है। ऐसे नहीं कि यह जावेगा तो दूसरा कोई गद्दी पर बैठेगा। (मु. 20.5.70 पृ.3 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
189	बाकी आज से सभी के लिए कौन निमित्त है, वह तो आप जानते ही हैं। (मनमोहिनी) दीदी तो हैं, साथ में कुमारका मददगार है। (अ.वा.21.1.69 पृ.21अंत, 22 आदि)	<a href="#">Download</a>
190	शुरू में थोड़े ही इतने चित्रों आदि के छपाई का काम था। यह क्रिश्चियन लोग जब आए हैं तब से यह शुरू हुए हैं। (मु. 27.8.68 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
191	पैसा कमाने के लिए कुछ तो चाहिए ना फिर किस्म-2 के चित्र बैठ बनाए हैं। (मु.18.8.73 पृ.2 मध्यांत, 8.8.93 पृ.02 अंत)	<a href="#">Download</a>
192	चित्र आदि जो भी बनाये हैं बेसमझी के। (मु.13.3.71 पृ.2 मध्य)	<a href="#">Download</a>

193	आसुरी मत पर अनेक ढेर के ढेर चित्र बने हैं। (मु. 5.5.68 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
194	प्रदर्शनी की राय बाबा ने थोड़े ही निकाली। यह रमेश बच्चे का इन्वेंशन है।... फिर बाबा भी पास करेंगे। (मु. 13.6.72 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
195	आप लोगों ने ही प्रकृति को सेवा दी है कि खूब सफाई करो। उसको लंबा-2 झाड़ू दिया है, सफा करो। ... गोल्डन एज में यह सफाई चाहिए ना। तो प्रकृति अच्छी सफाई करेगी। (अ.वा. 13.2.99 पृ.55 मध्य, 56 मध्य)	<a href="#">Download</a>
196	कमल के फूल को बाल-बच्चे बहुत होते हैं और मिसाल भी उनका ही दिया जाता है। बाप को भी बाल-बच्चे तो बहुत हैं। कमल का फूल खुद पानी के ऊपर रहता है। बाकी बाल-बच्चे नीचे रहते हैं। यह मिसाल अच्छा है। (मु. 28.12.83. पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
197	इस मायावी वैतारणी नदी में रहते कमल फूल समान पवित्र बनना है। कमल फूल बहुत बाल-बच्चों वाला होता है। फिर भी पानी से ऊपर रहता है। वह गृहस्थ है। बहुत चीजें पैदा करती है। यह दृष्टान्त तुम्हारे लिए (प्रजापिता ब्रह्मा के लिए) भी है। विकारों से न्यारा होकर रहो। (मु. 31.1.70 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>
198	कमल पुष्प निवृत्तिमार्ग वाला नहीं है पूरी ही प्रवृत्ति की निशानी है। (अ.वा. 9.04.73.अ.वा. पृ.21 आदि)	<a href="#">Download</a>
199	लड़ाई से कभी सृष्टि की बादशाही मिल न सके। यह वण्डर है ना। इस समय सब आपस में लड़कर खलास हो जाते हैं। मक्खन भारत को मिलता है। दिलाने वाली है वन्देमातरम्। मैजॉरिटी माताओं की है। (मु. 31.12.88 पृ 3 अंत)	<a href="#">Download</a>
200	रशिया और अमेरिका (अहंकारी और क्रोधी रूपी) दो भाई हैं। इन दोनों के ही कॉम्पिटीशन है बॉम्ब्स आदि बनाने की।... कहानी भी दिखाते हैं दो बिल्ले आपस में लड़े, मक्खन बीच में तीसरा खा गया। (मु. 22.10.68 पृ.2 आदि, 23.10.74 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>
201	योगबल से होती है स्थापना, बाहुबल से होता है विनाश। (मु. 11.2.68 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
202	इनमें रशिया का इनके साथ गिट-2 (खिट-2) है; क्योंकि फ्रांस, इंग्लैण्ड और अमेरिका ये फिर भी आपस में मिल जाएँगे। रशिया अलग है। (मु. रात्रि 6.9.65 पृ.1 आदि)	<a href="#">Download</a>
203	इस समय बाहुबल भी है, योगबल भी है।... यह तो दो क्रिश्चियन आपस में मिलें तो विश्व के मालिक बन सकते हैं। इतनी ताकत इन्हों में है; परंतु लॉ नहीं है। (मु. 13.11.72 पृ.2 अंत)	<a href="#">Download</a>

204	बाप कहते हैं अभी मैं तुम बच्चों के पास आया हूँ। नयनों पर बिठाय ले जाता हूँ। यह नयन नहीं, तीसरा नेत्रा... तुम जानते हो इस समय बाप आये हैं- करोड़ों को साथ ले जावेंगे। शंकर की बारात नहीं, शिव के बच्चों की बरात है। वह पतियों का पति भी है। (मु. 14.9.67 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
205	1. त्रेता के अंत तक 16,108 की बड़ी माला बनती है। (मु. 23.5.70 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
206	माला तैयार होना अर्थात् खेल खत्म। (अ.वा.18.1.79 पृ.230 अंत)	<a href="#">Download</a>
207	2. त्रेता अंत तक इतने प्रिन्स-प्रिन्सेज बनते हैं कुछ तो निशानी है ना। आठ की भी निशानी है, 108 की भी निशानी है... फिर वृद्धि होती जाती है। वह सब बनते यहाँ हैं। चान्स अभी बहुत अच्छा है; परन्तु मेहनत बहुत है। (मु. 25.5.71 पृ.2 मध्यांत)	<a href="#">Download</a>
208	सिर्फ 2 नंबर आउट हुए हैं, बाप और माँ। अभी कोई भी भाई-बहन का तीसरा नंबर आउट नहीं हुआ है। (अ.वा.31.10.06 पृ.3 आदि)	<a href="#">Download</a>
209	सीट कोई फिक्स नहीं हुई है। सिवाय ब्रह्मा बाप और जगदम्बा के और सब सीट खाली हैं। (अ.वा.25.11.95 पृ.40 मध्य)	<a href="#">Download</a>
210	जो जिस धर्म के है वह अपने धर्म स्थापक को याद करते है। (मु. 20.4.71 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
211	वास्तव में भारत का प्राचीन धर्म तो है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। हिन्दू तो धर्म ही नहीं। सब से ऊँच है देवी-देवता धर्म। अब कायदा कहता है सबसे ऊँच-ते-ऊँच धर्म वाले को (विश्व की बादशाही की) गद्दी पर बिठाना चाहिए। (मु. 24.12.78 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
212	अब देवता धर्म की स्थापना कर रहे हो। तुम ही बता सकते हो- भारत का जो मुख्य धर्म है जो सब धर्मों का माई बाप है- उनके हेड को इस कॉन्फ्रेंस में मुख्य बनाना चाहिए। गद्दी नशीन उनको करना चाहिए। बाकी तो सब हैं उनके नीचे। (मु. 24.12.78 पृ.1 मध्य)	<a href="#">Download</a>
213	बाप कहते हैं मैं आकर धर्म की स्थापना अधर्मों का विनाश करता हूँ। अधर्मियों को धर्म में ले आता हूँ। बाकी जो बचते हैं वह विनाश हो जावेंगे। (मु. 6.9.68 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
214	यह भारत भगवान की जन्मभूमि है। जैसे इब्राहीम, बौद्ध (बुद्ध) आदि की अपनी-2 जन्मभूमि (अर्थात् प्रगट होने का स्थान) है। (मु. 16.9.73 पृ.3 अंत)	<a href="#">Download</a>
215	धर्म शास्त्र उनको कहा जाता जब धर्म स्थापक ने जो समझाया उनका शास्त्र बनाया। धर्म स्थापन करने वाले के नाम पर शास्त्र बना। (मु. 24.6.65 पृ.2 आदि)	<a href="#">Download</a>

216

संन्यासियों का कोई शास्त्र है नहीं। धर्म का शास्त्र एक होता है। देवी देवता धर्म का शास्त्र गीता है। बाप ने जिस नॉलेज से धर्म स्थापन किया, उसको धर्म का शास्त्र कहा जाता है। (मु. 16.7.73 पृ.3 मध्य)

[Download](#)